हिंदी अध्यापक संघ
VICTERS CLASS - 19/11/21
10th Hindi, Notes
दिशाहीन दिशा

ക്ലാസ് കേൾക്കുന്നതിന് ഇവിടെ ക്ലിക്ക് ചെയ്യൂ....

1, 'मगर आप चाहे तो चंद गज़लें तरन्नुम के साथ अर्ज कर सकता हूँ।' इस कथन से आम जनता के साथ गज़लों के रिश्ते का क्या परिचय मिलता है ?

उत्तरः
आम जनता गज़लों से खूब परिचित थे। गज़ल आम जनता की ही कविता है। वे उसे गाते रहते हैं। क्योंकि उतनी मार्मिकता उसमें है। इसलिए बूढ़ा मल्लाह अब्दुल जब्बार भी शायर गालिब से परिचित थे। गायक न होते हुए भी मल्लाह कुछ गज़लें पेश करने को तैयार भी हुआ।

2, 'उसके खामोश हो जाने से सारा वातावरण ही बदल गया।' – इससे आपने क्या समझा ?

उत्तरः
बूढ़ा मल्लाह झूम-झूमकर गज़ल गा रहा था । लेखक और मित्र भी उसके गायन में विलीन हो गए। उसका गला काफ़ी अच्छा था, सुनाने का अंदाज़ा भी शायराना था। गाते समय रात, सर्दी, नाव का हिलना इन सबका अनुभव नहीं हो रहा था। अब होने लगा। झील का विस्तार भी उतनी देर के लिए सिमट गया था, अब खुल गया।

3, संबंध पहचानें, सही मिलान करें।

मोहन राकेश की बड़ी इच्छा थी	कि वहाँ जीवन बहुत सस्ता है।
समय और साधन की कमी से	मोहन राकेश ने यात्रा करने का निश्चय किया।
हाथ में पैसा आने पर	कि कन्याकुमारी चला जाऊँ
मोहन राकेश ने पहले सोचा था	कि समुद्र तट का सफ़र करें।
गोआ इसलिए हम जा सकते हैं	मोहन राकेश समुद्र तट की यात्रा न कर सके।

उत्तरः

मोहन राकेश की बड़ी इच्छा थी	कि समुद्र तट का सफर करें ।
समय और साधन की कमी से	मोहन राकेश समुद्र तट की यात्रा न कर सके।

हाथ में पैसा आने पर	मोहन राकेश ने यात्रा करने का निश्चय किया।
मोहन राकेश ने पहले सोचा था	कि कन्याकुमारी चला जाऊँ
गोआ इसलिए हम जा सकते हैं	कि वहाँ जीवन बहुत सस्ता है।

4, भोपाल ताल में अब्दुल जब्बार और अविनाश के साथ की सैर मोहन राकेश के लिए मज़ेदार थी। वे अपने अविस्मरणीय अनुभव दफ्तर के एक मित्र से बाँटना चाहते हैं। भोपाल ताल की सैर के अनुभवों का ज़िक्र करते हुए मित्र के नाम मोहन राकेश का पत्र लिखें।

भोपाल,
30-12-1952

प्रिय जयप्रकाशजी,
आप कैसे हैं ? दफ़्तर में सब कुशल है न? कुछ बातें आपसे बाँटना चाहता हूँ । सोचा कि एक चिट्ठी लिखू। अब मैं भोपाल में हूँ। मुंबई के रास्ते में था। डिब्बे में सोने के लिए सीट भी मिली थी। लेकिन रात आई तो मैं भोपाल ताल की एक नाव में लेटा बुढ़े मल्लाह अब्दुल जब्बार से गज़लें सुन रहा था।

भोपाल स्टेशन पर मित्र अविनाश ने मुझसे मिलने आया था। बात करने की जगह उसने मेरा बिस्तर लपेटकर खिड़की से बाहर फेंक दिया और खुद मेरा सूटकेस लिए हुए नीचे उतरा। रात ग्यारह बजे के बाद हम लोग घूमने निकले। जब भोपाल ताल के पास आया तो मन लगा कि नाव लेकर कुछ देर तक झील की सैर करें। अचानक अविनाश ने कहा कि कितना अच्छा होता अगर इस वक्त हम में से कोई कुछ गा सकता। हमारी नाव का मल्लाह अब्दुल जब्बार गायक तो नहीं, मगर उसने कुछ गज़लें तरन्नम के साथ पेश किया। उसका गला अच्छा था। सुनाने का अंदाज़ भी शायराना था। एक के बाद दूसरी फिर तीसरी। हम दोनों उसके गायन में विलीन हो गए थे। जब वह खामोश हो गया तो वातावरण ही बदल गया। रात, सर्दी का नाव का हिलना सबका अनुभव पहले नहीं हो रहा था, अब होने लगा। फिर उससे गालिब की गज़लें सुनाया गया। भोपाल-ताल की सैर मज़ेदार था, दिल कोछूनेवाली थी। दफ्तर में सबको मेरा नमस्कार कहना। बाकी सब अगले पत्र में तुरंत ही जवाबी पत्र की प्रतीक्षा करते हुए।

आपका अपना मित्र
(हस्ताक्षर)
मोहन राकेश

सेवा में
जयप्रकाश नारायण,
'प्रकाश विल्ला',
गाँधी लेन रोड, अमृतसर

5, चरित्र पर टिप्पणी लिखें।

बूढ़े मल्लाह ने एक गज़ल छेड़ दी। उसका गला काफ़ी अच्छा था और सुनाने का अंदाज़ | भी शायराना था। काफ़ी देर चप्पुओं को छोड़े वह झूम-झूमकर गज़लें सुनाता रहा।

'दिशाहीन दिशाट के अब्दुल जब्बार का व्यक्तित्व बड़ा प्रभावशाली है। ये संकेत पढ़ें और अब्दुल जब्बार के चरित्र पर टिप्पणी लिखें।

1. गरीब
2. परिश्रमी.
3. खुशमिज़ाज .
4. सादा जीवन बितानेवाला
5. विनयशील.
6. गज़ल गायक

"उत्तर:

गज़ल गायक - अब्दुलजब्बार

मोहनराकेश का यात्राविवरण 'दिशाहीन दिशा' के एक प्रभावशाली व्यक्ति है बूढ़ा मल्लाह श्री अब्दुल जब्बार । भोपाल-ताल की सैर में लेखक और मित्र का उनका परिचय होता है। हमेशा खुशमिज़ाज दिखाई पडनेवाला और सादा जीवन बितानेवाला था। दाढ़ी के ही नहीं छाति के भी बाल सफेद हो चुके थे। सर्दी के मौसम में भि सिर्फ तहमद लगाए आया था। भोपाल-ताल का नाविक अब्दुलजब्बार रात -दिन मेहनत करता रहता है। जब वह चप्पू चलाने लगता तो उसकी मांसपेशियाँ इस तरह हिलती जैसे उनमें फौलाद भरा हो । जब अविनाश गाने का आग्रह प्रकट किया तो बिना हिचक के तीन गज़लें छेड़ देता है। उसका गला काफ़ी अच्छा था । गज़लों से वह इतना परिचित था कि सुनाने का अंदाज़ भी शायराना था। कभी कभी नाव खोते समय चप्पुओं को छाड़े झूम-झूमकर गज़लें सुनाता था। असल में जब उसने गज़ले समाप्त की, वातावरण ही बदल गया था। अविनाश के अनुसार गालिब की चीज़ पेश करने को कहता है, तुरंत ही बिना एतराज के विनय के साथ गज़लें गाने लगा। मोटे तौर पर वह खुशमिज़ाज, विनयशील गरीब गज़लगायक अब्दुल जब्बार लेखक और मित्र के लिए उस रात अविस्मरणीय पात्र रहा।

6, रात को ग्यारह के बाद हम घूमने निकले। भोपाल ताल के पास पहुँचे तो मन हो आया कि नाव लेकर कुछ देर
झील की सैर की जाए। प्रस्तुत घटना को लेकर पटकथा का एक दृश्य लिखें।

दृश्य।:

स्थान: भोपाल ताल के किनारे ।
समय : रात साढ़े ग्यारह बजे ।
पात्र : मोहनराकेश, आयू: 50 वर्ष
वेश भूषा : कुर्ता- पाजामा

अविनाश -आयु : 48 वर्ष
वेशभूषा : कुर्ता पाजामा

अब्दुल जब्बारआयु : करीब 60 वर्ष
वेशभूषा : तहमद पहने है ।

दृश्य का विवरण:

(भोपाल ताल में नाव खोते हुए एक बूढ़ा मल्लाह नज़र आ रहा है। नाव में मोहनराकेश और मित्र अविनाश है। मोहनराकेश लेटे हुए है। मल्लाह सिर्फ तहमद पहना हुआ है। कडी सर्दी है। अविनाश गज़ल गाने का आग्रह प्रकट करता है। बूढ़ा मल्लाह गाने की धुन में है)

मोहनराकेश : बडी सुहानी रात है, कडी सर्द भी है। अविनाश : हाँ, अगर हममें से कोई इस वक्त कोई गाना पेश करें तो कितना अच्छा होता।
अब्दुलजब्बार : मैं गा तो नहीं सकता, हुजूर । अविनाश : फिर भी कुछ प्रयास करें।
अब्दुलजब्बार : कुछ गज़लें तरन्नुम के साथ पेश करने का प्रयास करूँ ?
मोहनराकेश और अविनाश : (एकसाथ) ज़रूर, ज़रूर ।
(बूढा मल्लाह ताल- लय के साथ गज़लें गाने लगता है।)